32

भारत की जनसंख्या

संरचना, समस्या और उपाय

32.1 भूमिका

आप पिछले पाठ में पढ़ चुके हैं कि देश की जनसंख्या ही उसका मानवीय संसाधन होती है। किसी भी देश की जनसंख्या की विशेषताओं जैसे कि उसका आकार, वृद्धि दर, आयु व लिंग पर आधारित संरचना, साक्षरता का स्तर आदि के बारे में जानना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है। इस पाठ में आप भारत की जनसंख्या की विशेषताओं, उससे उत्पन्न होने वाली समस्याओं और इन समस्याओं का समाधान करने के लिए उठाए गए उपायों का अध्ययन करेंगे।

32.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आपः

- पिछले कुछ दशकों में भारत की जनसंख्या के आकार में हुई वृद्धि को बता सकेंगे;
- वर्ष 1921 के बाद से भारत की जनसंख्या वृद्धि दर को बता सकेंगे;
- भारत की जनसंख्या की संरचना को स्पष्ट कर सकेंगे;
- देश में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर के कारण उत्पन्न हुई समस्याओं को बता सकेंगे;
- जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर के कारण उत्पन्न हुई समस्याओं के समाधान के उपाए बता सकेंगे।

32.3 जनसंख्या का आकार और वृद्धि

(अ) जनसंख्या का आकार

देश की जनसंख्या से तात्पर्य देश में एक निश्चित समयावधि में रहने वाले व्यक्तियों की संख्या से होता है। देश में व्यक्तियों की गणना प्रत्येक दस वर्ष बाद की जाती है। इसे **जनगणना** कहते हैं। भारत में पिछली जनगणना वर्ष 1991 में की गई थी और अगली जनगणना वर्ष 2001 में की जाएगी। वर्ष 1991 में की गई जनगणना 1 मार्च 1991 के सूर्योदय के समय जनसंख्या को दर्शाती है। यह जनसंख्या 84.63 करोड़ थी। जनगणना के द्वारा जनसंख्या के आकार के अतिरिक्त और बहुत-सी महत्त्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त होती हैं जैसे कि जनसंख्या की लिंग व आयु पर आधारित संरचना, वृद्धि दर, शिक्षा का स्तर, जनसंख्या का घनत्व आदि।

तालिका 32.1 में वर्ष 1901 से वर्ष 1991 तक की गई जनगणना के आधार पर जनसंख्या के आकार को दर्शाया गया है।

तालिका 32.1

भारत की जनसंख्या (करोड़)

वर्ष	जनसंख्या	वर्ष	जनसंख्या
1901	23.80	1951	36.10
1911	25.20	1961	43.92
1921	25.10	1971	54.81
1931	27.90	1981	68.33
1941	31.87	1991	84.63

तालिका 32.1 में दी गई सूचना के आधार पर सांख्यिकीय की सहायता से जनगणना वाले वर्षों के अलावा अन्य वर्षों में भी जनसंख्या ज्ञात की जा सकती है। यह अनुमान लगाया गया है कि वर्ष 1996 में भारत की जनसंख्या लगभग 93.4 करोड़ थी। अतः भारत की जनसंख्या 100 करोड़ की संख्या की तरफ बढ़ रही है। देश की जनसंख्या वर्ष 1901 की जनसंख्या से 10 गुना अधिक हो गई है और वर्ष 1941 की तुलना में यह लगभग तीन गुना अधिक हो गई है। वर्ष 1901 से जनसंख्या में जितनी वृद्धि हुई है, उसका लगभग 70% वृद्धि 1951 के बाद हुई है।

क्या भारत की वर्तमान जनसंख्या का आकार बड़ा है? आइए, इस पर विचार करें।

जनसंख्या के आधार पर भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। पहला स्थान चीन का है। भारत की जनसंख्या विश्व की जनसंख्या का लगभग 16% है। अर्थात् विश्व में प्रत्येक छटा व्यक्ति भारतीय है। आपको शायद यह जानकर आश्चर्य होगा कि विश्व में केवल चार देश ऐसे हैं जिनकी जनसंख्या उत्तर

प्रदेश की जनसंख्या से अधिक है। ये देश हैं: चीन, अमरीका, ब्राजील और इंडोनेशिया। लेकिन भारत का क्षेत्रफल विश्व के क्षेत्रफल का केवल 2.42 प्रतिशत है। अतः यह कहा जा सकता है कि भारत की जनसंख्या का आकार बड़ा है।

(ब) जनसंख्या की वृद्धि

भारत की जनसंख्या न केवल अधिक है बल्कि इसमें वृद्धि भी तेजी से हुई है। यदि आप फिर से तालिका 32.1 देखें तो आप पाएंगे कि प्रत्येक अगले दशक में जनसंख्या में हुई वृद्धि अधिक है। 1951 से 1961 के दशक में जनसंख्या में कुल वृद्धि लगभग 7.8 करोड़ थी। यह वृद्धि इंग्लैंड की कुल जनसंख्या का डेढ़ गुना है। 1971 से 1981 के दशक में यह वृद्धि 13.5 करोड़ हुई जो इंग्लैंड की जनसंख्या का ढाई गुना है। 1961 से 1971 में जनसंख्या 10.8 करोड़ बढ़ी। यह वृद्धि जापान की कुल जनसंख्या का तीन-चौथाई है। 1981 से 1991 के दशक में यह वृद्धि लगभग 16.3 करोड़ थी जो जापान की जनसंख्या से अधिक है।

भारत की जनसंख्या में प्रति मिनट लगभग 34 लोग बढ़ जाते हैं जबकि इंडोनेशिया की जनसंख्या प्रति मिनट केवल 5 बढ़ती है और जापान की जनसंख्या प्रति मिनट केवल 1 बढ़ती है। विश्व की जनसंख्या प्रति मिनट लगभग 173 बढ़ती है। विश्व जनसंख्या में जो वृद्धि होती है उसमें भारत का योगदान सबसे अधिक है। इन सब बातों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत की जनसंख्या में हुई कुल वृद्धि बहुत है और यह वृद्धि बढ़ती ही जा रही है। तालिका 32.2 में भारत में जनसंख्या की वृद्धि दर को दर्शाया गया है।

तालिका 32.2

भारत में जनसंख्या की वृद्धि दर

जनगणना वर्ष	जनसंख्या (करोड़) (1)	दशक में हुई प्रतिशत वृद्धि/कमी (करोड़) (2)	वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत) (3)
1901	23.8	-	-
1911	25.2	5.75	0.56
1921	25.1	(–) 0.31	(–) 0.03
1931	27.9	11.00	1.04
1941	31.87	14.22	1.33
1951	36.10	13.31	1.25
1961	43.92	21.51	1.96
1971	54.81	24.80	2.20
1981	68.33	24.66	2.22
1991	84.63	23.50	2.11

तालिका 32.2 से स्पष्ट है कि भारत की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई है। वर्ष 1921 तक जनसंख्या में वृद्धि बहुत कम थी। 1901 से 1921 तक जनसंख्या में वार्षिक प्रतिशत वृद्धि केवल 0.27 थी। वर्ष 1921 से जनसंख्या में निरन्तर तेजी से वृद्धि हो रही है। वर्ष 1951 से जनसंख्या की वृद्धि दर तीव्र हो गई। भारत की जनसंख्या का आकार बहुत बड़ा है और इसमें 2 प्रतिशत से अधिक वार्षिक वृद्धि दर चिन्ताजनक स्थिति उत्पन्न करती है। 1981-91 की अवधि में भारत की जनसंख्या 2.11 प्रतिशत की दर से बढ़ी जबकि चीन की जनसंख्या इसी अवधि में 1.5 प्रतिशत की दर से बढ़ी। जनसंख्या की वर्तमान वृद्धि दर भारत को 10 वर्षों में विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बना देगी।

आइए, अब हम उन कारणों पर विचार करें जिनके कारण भारत की जनसंख्या की वृद्धि दर तीव्र हुई है। भारत एक विकासशील देश है। आप पिछले पाठ में पढ़ चके हैं कि किसी भी देश की जनसंख्या में होने वाली वृद्धि के तीन चरण होते हैं। भारत दूसरे चरण में है जिसमें मृत्यु दर तो तेजी से कम होती है लेकिन जन्म दर धीरे-धीरे कम होती है। इस कारण जन्म दर और मृत्यु दर का अन्तर बढ़ जाता है और यह अन्तर ही जनसंख्या की वृद्धि दर है। तालिका 32.3 में 1901 से जन्म दर और मृत्यु दर और दशक की जनसंख्या वृद्धि दर दिखाई गई है।

तालिका 32.3

अवधि	प्रति 1000 जनसंख्या पर वार्षिक दर		प्राकृतिक वृद्धि दर
	जन्म दर (1)	मृत्यु दर (2)	(3)
1901-1911	49.2	42.6	6.6
1911-1921.	48.1	48.6	(–) 0.5
1921-1931	46.4	36.3	10.1
1931-1941	45.2	31.2	14.0
1941-1951	39.9	27.4	12.5
1951-1961	41.7	22.8	18.9
1961-1971	41.2	19.0	22.2
1971-1981	37.2	15.0	22.2
1981-1991	32.5	11.4	21.1

भारत एक विकासशील देश है। तालिका 32.3 से स्पष्ट है कि भारत में जन्म दर धीरे-धीरे कम हो रही है जबकि मृत्यु दर तेजी से घटी है।

भारत में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर के कारण जनसंख्या का आकार बहुत बड़ा हो गया है। यदि वृद्धि दर कम भी हो जाए तो भी जनसंख्या के बड़े आकार के कारण प्रति वर्ष जनसंख्या में वृद्धि बहुत अधिक होगी।

याद रखिए

- देश की जनसंख्या के आकार से तात्पर्य उस देश में एक निश्चित समयावधि में रहने वाले व्यक्तियों की कुल संख्या से है।
- भारत में जनगणना प्रत्येक 10 वर्षों के बाद की जाती है। पिछली जनगणना 1991 में की गई थी।
- भारत की जनसंख्या का आकार बहुत बड़ा है। यह विश्व की जनसंख्या का 16% है जबकि भारत का क्षेत्रफल विश्व क्षेत्रफल का केवल 2.4 प्रतिशत है। भारत में जनसंख्या वृद्धि दर भी बहुत ऊंची है।
- भारत में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर का मुख्य कारण मृत्यु दर का तेजी से कम होना और जन्म दर का धीरे-धीरे कम होना है।

पाठगत प्रश्न 32.1

1. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही है और कौन-सा गलत है?

   (i) जनगणना से केवल जनसंख्या के आकार के बारे में सूचना प्राप्त होती है।

   (ii) भारत की जनसंख्या 1901 से तेजी से बढ़ रही है।

   (iii) भारत की जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर तेजी से घटती मृत्यु दर और धीरे-धीरे घटती जन्म दर के कारण है।

2. कोष्टक में दिए गए विकल्पों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

   (i) वर्ष 1991 में भारत की जनसंख्या.................................करोड़ थी। (84, 63, 87, 43)

   (ii) 1981-1991 की अवधि में भारत में जन्म दर व मृत्यु दर क्रमशः.................................और ....प्रति हजार थी। (25, 10, 32.5, 11.4)

   (iii) 1981-1991 की अवधि में भारत की जनसख्या की वार्षिक वृद्धि पर................................. प्रतिशत थी। (2.22, 2.11)

   (iv) भारत में जनगणना प्रत्येक.................................वर्षों के बाद की जाती है। (5, 10)

   (v) भारत में अगली जनगणना.................................में की जाएगी। (2001, 2005)

32.4 जनसंख्या की संरचना

इस अनुभाग में हम भारतीय जनसंख्या की कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषताओं जैसे जनसंख्या की आयु और लिंग पर आधारित संरचना, शहरी व ग्रामीण अनुपात, साक्षरता का स्तर और जनसंख्या के घनत्व आदि का अध्ययन करेंगे।

(i) लिंग पर आधारित संरचना

लिंग पर आधारित जनसंख्या की संरचना का अर्थ है कुल जनसंख्या में पुरूषों और स्त्रियों की संख्या। इसे साधारणतया एक अनुपात के रूप में व्यक्त किया जाता है। प्रति 1000 पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या को लिंग अनुपात कहते हैं। इसे निम्नलिखित सूत्र द्वारा ज्ञात किया जाता है।

$$\text{लिंग अनुपात} = \frac{\text{स्त्रियों की कुल संख्या}}{\text{पुरूषों की कुल संख्या}} \times 1000$$

तालिका 32.4 में भारत में 1901 से लिंग अनुपात दिखाया गया है।

तालिका 32.4

वर्ष	लिंग अनुपात	वर्ष	लिंग अनुपात
1901	972	1951	946
1911	964	1961	941
1921	955	1971	930
1931	950	1981	934
1941	945	1991	929

तालिका 32.4 से स्पष्ट है कि भारत में पुरूषों की संख्या स्त्रियों की संख्या से अधिक है और पुरूषों का अनुपात बढ़ता जा रहा है। दूसरे शब्दों में, प्रति 1000 पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या 1000 से कम रही है और यह घटती जा रही है। यह संख्या 1901 में 972 थी जो 1951 में घटकर 946 और 1991 में और घटकर 929 हो गई। किसी भी विकसित देश में कभी भी स्त्रियों की संख्या पुरूषों की संख्या से कम नहीं रही।

तालिका 32.4 में दिए गए आंकड़े पूरे देश के लिए हैं। देश के विभिन्न राज्यों में लिंग अनुपातों में बहुत विभिन्नता है। उदाहरण के लिए, केरल में लिंग अनुपात 1036 है जबकि उत्तरप्रदेश में यह अनुपात 879 है। भारत में लिंग अनुपात कम होने के मुख्य कारण हैंः जनगणना में स्त्रियों की कम गणना, समाज में स्त्रियों का नीचा स्थान, कम आयु में विवाह जिससे स्त्रियों में मृत्यु दर का ऊंचा होना, स्त्रियों में कम साक्षरता का स्तर आदि।

(ii) आयु के आधार पर जनसंख्या की संरचना

आयु के आधार पर जनसंख की संरचना का अर्थ है विभिन्न आयु वर्गों की जनसंख्या का कुल जनसंख्या में अनुपात। जनसंख्या को तीन आयु वर्गों में बांटा जाता है: (i) 15 वर्ष से कम आयु (ii) 15 से 59 वर्ष की आयु (iii) 60 वर्ष और उससे अधिक आयु। 15 से 59 वर्ष की आयु काम करने योग्य आयु (श्रम योग्य आयु) समझी जाती है। अन्य दो वर्गों यानि 15 वर्ष से कम व 60 वर्ष और उससे अधिक आयु वाली जनसंख्या को आश्रित जनसंख्या माना जाता है।

1980 में भारत में 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों का अनुपात 40 प्रतिशत था और 1992 में यह अनुपात लगभग 35.5 प्रतिशत था। इसी अवधि में 60 वर्ष व उससे अधिक आयु वर्ग का अनुपात 6.5 प्रतिशत और 6.65 प्रतिशत के आसपास रहा है। इन दोनों आयु वर्गों की जनसंख्या, कुल जनसंख्या का लगभग 42 प्रतिशत है। इन व्यक्तियों को अनुत्पादक उपभोक्ता कहा जाता है। इससे यह स्पष्ट है कि आश्रित जनसंख्या का श्रम योग्य जनसंख्या पर भार अधिक है। इससे यह भी पता चलता है कि श्रम योग्य जनसंख्या का अनुपात बढ़ेगा अर्थात् नौकरी पाने वालों की संख्या भी बढ़ेगी। आश्रितों एवं श्रम योग्य लोगों के वर्गों के बीच के अनुपात को निर्भरता अनुपात कहते हैं।

$$\text{निर्भरता अनुपात} = \frac{\text{आश्रित जनसंख्या का प्रतिशत}}{\text{श्रम योग्य जनसंख्या का प्रतिशत}} \times 100$$

(iii) ग्रामीण एवं शहरी वितरण

भारत में ग्रामीण जनसंख्या, शहरी जनसंख्या से अधिक है। अतः कुल जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात अधिक है। तालिका 32.5 में 1901 से भारत की कुल जनसंख्या का शहरी एवं ग्रामीण जनसंख्या के रूप में अनुपात दर्शाया गया है।

तालिका 32.5

वर्ष	कुल जनसंख्या का अनुपात ग्रामीण/शहरी		वर्ष	कुल जनसंख्या का अनुपात ग्रामीण/शहरी	
1901	89.2	10.8	1951	82.7	17.3
1911	89.7	10.3	1961	82.0	18.0
1921	88.8	11.2	1971	80.1	19.9
1931	88.0	12.0	1981	76.7	23.3
1941	86.1	13.9	1991	74.3	25.7

भारत की लगभग तीन-चौथाई जनसंख्या गांवों में रहती है। इसलिए भारतीय अर्थव्यवस्था को ग्रामीण अर्थव्यवस्था कहना उचित है। इससे यह भी पता चलता है कि हमारे देश में कृषि मुख्य व्यवसाय है। यद्यपि ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात घट रहा है। वर्ष 1901 में यह 89.2 प्रतिशत था और वर्ष 1991 में 74.3 प्रतिशत था, लेकिन यह गिरावट अधिक नहीं है।

(iv) जनसंख्या का घनत्व

प्रति वर्ग किलोमीटर व्यक्तियों की औसत संख्या जनसंख्या का घनत्व कहलाती है। जनसंख्या का घनत्व, कुल जनसंख्या को कुल भू-क्षेत्रफल से भाग करके ज्ञात किया जाता है। यानि

$$\text{जनसंख्या का घनत्व} = \frac{\text{कुल जनसंख्या}}{\text{कुल भू-क्षेत्रफल}}$$

किसी भी देश का भू-क्षेत्रफल स्थिर होता है। अतः यदि जनसंख्या तेजी से बढ़ेगी तो जनसंख्या का घनत्व भी तेजी से बढ़ेगा। यह स्थिति तालिका 32.6 में दिए गए आंकड़ों से स्पष्ट है।

तालिका 32.6

वर्ष	जनसंख्या का घनत्व	वर्ष	जनसंख्या का घनत्व
1901	77	1951	117
1911	82	1961	142
1921	81	1971	177
1931	90	1981	216
1941	103	1991	274

वर्ष 1951 से भारत में जनसंख्या का घनत्व तेजी से बढ़ा है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। अतः जनसंख्या के बढ़ते हुए घनत्व से भूमि पर दबाव बढ़ता है।

(v) साक्षरता की दर

जो व्यक्ति किसी भी भाषा में समझकर लिख और पढ़ सकते हैं उसे साक्षर व्यक्ति कहते हैं। 1991 की जनगणना में साक्षरता दर की गणना 7 वर्ष व उससे अधिक आयु की जनसंख्या के लिए की गई थी। 1951 में साक्षरता की दर केवल 16.7 प्रतिशत थी, पुरूषों के लिए यह 25 प्रतिशत और स्त्रियों के लिए 8 प्रतिशत थी। 1991 में साक्षरता की दर 52.2 प्रतिशत थी, पुरूषों के लिए यह 64.1 प्रतिशत और स्त्रियों के लिए 39.3 प्रतिशत थी। 1981 में साक्षरता की दर 36.2 प्रतिशत थी पुरुषों के लिए यह 46.9 प्रतिशत और स्त्रियों के लिए 24.8 प्रतिशत थी । हालांकि साक्षरता की दर बढ़ी है लेकिन इसके साथ-साथ निरक्षर व्यक्तियों की संख्या भी बढ़ी है। 1981 में देश में निरक्षरों की संख्या 30.19 करोड़ थी और 1991 में यह बढ़कर 32.4 करोड़ हो गई। जनसंख्या की तीव्र वृद्धि के कारण यह वृद्धि हुई है।

(vi) प्रत्याशित आयु

नवजात शिशु की औसत आयु को प्रत्याशित आयु कहते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय में भारत में प्रत्याशित आयु केवल 32 वर्ष थी। 1991 में यह बढ़कर 58 वर्ष हो गई। 1991 से 1996 की अवधि के लिए यह 61.2 वर्ष थी। स्त्रियों की प्रत्याशित आयु पुरूषों से अधिक है। 1991-96 की अवधि में पुरूषों की प्रत्याशित आयु 60.6 वर्ष थी जबकि स्त्रियों की प्रत्याशित आयु 61.7 वर्ष थी। शहरी जनसंख्या की प्रत्याशित आयु ग्रामीण जनसंख्या की प्रत्याशित आयु से काफी अधिक है। 1990 में ग्रामीण जनसंख्या और शहरी जनसंख्या की प्रत्याशित आयु क्रमशः 57.4 वर्ष और 64.1 वर्ष थी।

(vii) अंतर-प्रदेशीय विभिन्नताएं

भारत की जनसंख्या के लगभग सभी पहलुओं में बहुत अधिक अंतर-प्रदेशीय विभिन्नताएं हैं। 1994 में केरल राज्य में जन्म दर 17.3 और तमिलनाडु में 19 थी जबकि उत्तरप्रदेश में 35.4, राजस्थान में 33.7 और बिहार में 32.5 थी। 1994 में केरल में मृत्यु दर 6.0 थी जबकि मध्यप्रदेश में 11.5 थी। 1991 में 8 राज्यों में जनसंख्या की वृद्धि दर राष्ट्रीय औसत वृद्धि दर से कम थी। ये राज्य हैं: गुजरात, कर्नाटक, पंजाब, उड़ीसा, हिमाचल प्रदेश, गोवा, तमिलनाडु और केरल। उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र में जनसंख्या की वृद्धि दर राष्ट्रीय औसत से बहुत ऊंची थी। केरल ही एकमात्र ऐसा राज्य है जहां लिंग अनुपात 1000 से अधिक है। 1991 की जनगणना के अनुसार केरल में लिंग अनुपात 1036 था जबकि हरियाणा, उत्तरप्रदेश और पंजाब में लिंग अनुपात 900 से कम था।

भारत के विभिन्न राज्यों में साक्षरता के स्तर में भी बहुत विभिन्नताएं हैं। पुरूषों में साक्षरता दर केरल में 95 प्रतिशत है जबकि बिहार, उत्तरप्रदेश और राजस्थान में लगभग 55 प्रतिशत है। स्त्रियों की साक्षरता दर में विभिन्नताएं और भी अधिक हैं।

जनसंख्या के घनत्व में भी अंतर-प्रदेशीय विभिन्नताएं बहुत अधिक हैं। दिल्ली में जनसंख्या का घनत्व 6319 है जबकि अरूणाचल प्रदेश में 10 है। केरल में प्रत्याशित आयु 70 वर्ष है जबकि मध्यप्रदेश में 52.2 वर्ष है।

याद रखिए

- भारत की जनसंख्या का आकार बड़ा है और इसकी वृद्धि दर भी तेज है।
- भारत में लिंग अनुपात घट रहा है। अर्थात् कुल जनसंख्या में पुरूषों को अनुपात स्त्रियों के अनुपात से अधिक है।
- 15 वर्ष से कम आयु व 60 और उससे अधिक आयु की जनसंख्या का कुल जनसंख्या में अनुपात अधिक है। अतः निर्भरता अनुपात अधिक है।
- भारत की जनसंख्या का तीन-चौथाई भाग गांवों में रहता है।

- जनसंख्या का घनत्व तेजी से बढ़ रहा है। यह जनसख्या की तीव्र वृद्धि दर के कारण है।
- स्वतंत्रता के बाद से साक्षरता की दर में वृद्धि हुई है लेकिन तीव्र जनसंख्या वृद्धि दर के कारण निरक्षरों की संख्या भी बढ़ी है। पुरूषों में साक्षरता का स्तर स्त्रियों में साक्षरता के स्तर से अधिक है। शहरी जनसंख्या में साक्षरता की दर ग्रामीण जनसंख्या की साक्षरता की दर से अधिक है।
- भारत की जनसंख्या की विशेषताओं में अंतर-प्रदेशीय विभिन्नताएं बहुल हैं। उदाहरण के लिए, केरल में सबसे अधिक लिंग अनुपात है, सबसे कम जन्म दर और जनसंख्या की वृद्धि दर है और सबसे अधिक साक्षरता का स्तर और प्रत्याशित आयु है। यह अन्तर विभिन्न राज्यों में बहुत अधिक है।

पाठगत प्रश्न 32.2

1. कोष्टक में दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः

   (i) भारत में 1991 में लिंग अनुपात.................................था। (949, 929)

   (ii) भारत में.................................की संख्या.................................से अधिक है। (स्त्रियों, पुरूषों)

   (iii) भारत में निर्भरता अनुपात.................................है। (ऊंचा, नीचा)

   (iv) भारत की लगभग.................................प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है। (50, 75, 90)

   (v) जनसंख्या के तेजी से बढ़ने से जनसंख्या का घनत्व भी.................................है। (घटता, बढ़ता)

   (vi) 1981 से भारत में निरक्षरों की संख्या.................................है। (घटी, बढ़ी)

   (vii) भारत में साक्षरता दर की गणना.................................वर्ष और उससे अधिक आयु की जनसंख्या के लिए की जाती है। (5, 7, 15)

   (viii) ग्रामीण जनसंख्या की प्रत्याशित आयु शहरी जनसंख्या की प्रत्याशित आयु से.................................है। (कम, अधिक)

   (ix) स्त्रियों की प्रत्याशित आयु पुरूषों की प्रत्याशित आयु से.................................है। (कम, अधिक)

2. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही है और कौन-सा गलत हैः

   (i) भारत में केरल राज्य में सबसे अधिक लिंग अनुपात और सबसे अधिक जन्म दर है।

   (ii) भारत में पंजाब में सबसे अधिक लिंग अनुपात है।

(iii) लिंग अनुपात का अर्थ है प्रति 1000 पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या।

(iv) भारत की लगभग एक-तिहाई जनसंख्या की आयु 15 वर्ष से कम है।

(v) देश की जनसंख्या और देश के क्षेत्रफल के अनुपात को जनसंख्या का घनत्व कहते हैं।

(vi) भारत में 1981 से प्रत्याशित आयु में वृद्धि नहीं हुई है।

(vii) मध्यप्रदेश में प्रत्याशित आयु सबसे कम है।

32.5 जनसंख्या की समस्या

जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि भारत की जनसंख्या बहुत अधिक है और उसकी वृद्धि दर भी तीव्र है। इस कारण जनसंख्या में प्रति वर्ष होने वाली वृद्धि बहुत अधिक है। जनसंख्या में इतनी वृद्धि अवांछनीय है। यह देश की आर्थिक वृद्धि में अवरोधक है और जो भी आर्थिक संवृद्धि होती है वह पूरी तरह से आय के स्तर में वृद्धि को नहीं दिखाती है। प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि दर राष्ट्रीय आय की वृद्धि दर से कम रही है।

तीव्र जनसंख्या वृद्धि दर का बचत की दर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जनसंख्या के तेजी से बढ़ने के कारण भोजन, कपड़े, आवास, शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाओं जैसी उपभोग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अधिक संसाधनों का उपयोग करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त इससे बेरोजगारी और गरीबी जैसी समस्याएं भी अधिक गंभीर रूप धारण कर लेती हैं जिससे राजनैतिक व सामाजिक तनाव भी बढ़ता है। बिजली आदि जैसी बुनियादी सुविधाओं की और अधिक कमी हो जाती है।

इन सबके परिणामस्वरूप मानवीय जीवन की गुणवत्ता में सुधार नहीं हो पाता है जिसकी झलक निम्न साक्षरता दर, नीची प्रत्याशित आयु, जनसंख्या के बड़े भाग को पीने का पानी न मिलना, कुपोषण, उचित आवास का अभाव और ऊंची शिशु मृत्यु दर आदि में साफ दिखाई देती है।

भारत में मृत्यु दर तेजी से घटी है, लेकिन जन्म दर के धीरे-धीरे कम होने से जनसंख्या ने विस्फोटक स्थिति ले ली है। अतः यह कहना उचित होगा कि जनसंख्या की समस्या का समाधान केवल जन्म दर को तेजी से कम करके ही किया जा सकता है। लेकिन यह कार्य सरल नहीं है क्योंकि जिन कारकों पर यह आधारित है वे बहुत ही जटिल प्रकृति के हैं जैसे सामाजिक व धामिक दृष्टिकोण और विश्वास, आय का निम्न स्तर और ऊंची शिशु मृत्यु दर आदि।

जैसा कि आप पिछले पाठ में पढ़ चुके हैं कि जैसे-जैसे आर्थिक संवृद्धि की गति तेज होती है जन्म दर भी घटने लगती है। लेकिन इससे जन्म दर में वांछनीय कमी होने में बहुत समय लगता है। अब आवश्यकता इसे तेजी से और जल्दी से कम करने की है। अतः जन्म दर को तेजी से कम करने के लिए संकल्पित प्रयत्न करने की आवश्यकता है।

याद रखिए

- भारत में जनसंख्या की समस्या के दो पहलू हैं (i) इसका आकार, और (ii) इसकी वृद्धि दर।
- यह तीव्र आर्थिक संवृद्धि में अवरोधक है। आर्थिक संवृद्धि का सूचक राष्ट्रीय आय में वृद्धि है। लेकिन जनसंख्या की ऊंची वृद्धि दर के कारण राष्ट्रीय आय की तुलना में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि बहुत धीमी दर से होती है।
- जनसंख्या के आकार और उसमें तेजी से वृद्धि होने के कारण बचत की दर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इससे बेरोजगारी, गरीबी, निरक्षरता आदि जैसी समस्याएं और गंभीर रूप धारण कर लेती हैं।

पाठगत प्रश्न 32.3

निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही है और कौन-सा गलत है?

(i) भारत में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर बड़ी श्रम शक्ति का स्रोत है, इसलिए यह आर्थिक वृद्धि में सहायक है।

(ii) भारत में जनसंख्या की ऊंची वृद्धि दर होने के कारण राष्ट्रीय आय में होने वाली वृद्धि की तुलना में प्रति व्यक्ति आय में कम वृद्धि होती है।

(iii) जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर को जन्म दर में तेजी से कमी करके रोका जा सकता है।

(iv) भारत में जनसंख्या के बड़े आकार और तीव्र वृद्धि दर से बचत की दर में वृद्धि होती है।

32.6 जनसंख्या की समस्या के समाधान के लिए उपाए

अब तक आपको यह स्पष्ट हो गया है कि भारत की जनसंख्या के बड़े आकार और उसकी ऊंची वृद्धि दर को कम करने का एकमात्र उपाय जन्म दर को तेजी से घटाना है।

भारत विश्व में पहला ऐसा विकासशील देश था जिसने जनसंख्या की ऊंची वृद्धि दर को कम करने के लिए एक जनसंख्या नीति अपनाई। यह नीति 1951-52 में बनाई गई थी। तब से इस दिशा में बहुत से कदम उठाए गए हैं। सरकार द्वारा किए गए कुछ महत्त्वपूर्ण उपाए निम्नलिखित हैं:

(i) जनसंख्या नीति का मूल तत्व है लोगों को समझाकर प्रेरित करना, न कि उनके साथ जोर-जबरदस्ती करना। यह कार्य गर्भ निरोधकों की आवश्यकता और परिवार नियोजन कार्यक्रमों का प्रचार करके किया जाता है। पाठशालाओं के पाठ्यक्रमों में जनसंख्या विषय को भी शामिल किया गया है।

(ii) शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार नियोजन व कल्याण केन्द्र स्थापित किए गए हैं। ये केन्द्र परिवार नियोजन के संबंध में शिक्षा, प्रतिरक्षण जैसी सुविधा व अन्य स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करते हैं।

(iii) विवाह के समय पर स्त्री और पुरूष की आयु बढ़ाकर क्रमशः 18 वर्ष और 21 वर्ष निश्चित कर दी गई है।

(iv) जन्म दर को घटाने के लिए बहुत-से तरीके अपनाए गए हैं जैसे पुरूषों के लिए निरोध, स्त्रियों के लिए लूप व गोलियां और बन्ध्यीकरण आदि।

(v) लोगों को गर्भ निरोधक उपाए अपनाने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोत्साहन दिए जाते हैं जैसे नकद इनाम, वेतन में वृद्धि आदि।

(vi) परिवार नियोजन कार्यक्रमों को चलाने वाले व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण संस्थाएं शुरू की गई हैं। बहुत-से अनुसंधान केन्द्र भी स्थापित किए गए हैं।

(vii) स्त्रियों को शिक्षित करने और उन्हें रोजगार प्रदान करने के लिए बहुत-से कदम उठाए गए हैं क्योंकि इसका जन्म दर पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यह देखा गया है कि शिक्षित व काम-काजी महिलाओं के कम बच्चे होते हैं।

(viii) विभिन्न व्यक्तियों, निजी संस्थाओं व पंचायत आदि जैसी अन्य संस्थाओं को परिवार कल्याण कार्यक्रमों में शामिल करना इस दिशा में एक नया कदम है।

परिवार नियोजन से संबंधी विभिन्न कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने का दायित्व राज्य सरकारों का होता है हालांकि ये कार्यक्रम केन्द्र सरकार द्वारा बनाए जाते हैं और इन पर होने वाला व्यय भी केन्द्र सरकार द्वारा उठाया जाता है। जैसाकि आप पढ़ चुके हैं कि जन्म दर में अंतर-प्रदेशीय विभिन्नताएं बहुत अधिक हैं। अतः अलग-अलग राज्यों या राज्यों के समूहों के लिए उनकी आवश्यकता के अनुसार अलग-अलग प्रकार के उपायों को अपनाने की आवश्यकता है।

याद रखिए

जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर को कम करने के लिए सरकार ने निम्नलिखित कदम उठाए हैं:

(i) लोगों को समझाकर व प्रोत्साहन देकर परिवार छोटा रखने के लिए प्रेरित करना।

(ii) विभिन्न परिवार नियोजन कार्यक्रमों का प्रचार करना व स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित करना।

(iii) स्त्रियों व पुरूषों की विवाह योग्य आयु बढ़ाना।

(iv) विभिन्न गर्भ निरोधक उपाए उपलब्ध कराना व प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करना।

(v) स्त्रियों की शिक्षा व रोजगार पर विशेष ध्यान देना।

(vi) विभिन्न व्यक्तियों, स्वेच्छिक संस्थाओं व अन्य संस्थाओं को परिवार नियोजन कार्यक्रमों में शामिल करना।

पाठगत प्रश्न 32.4

निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही है और कौन-सा गलत हैः

(i) विभिन्न परिवार नियोजन कार्यक्रमों पर व्यय राज्य सरकारों को करना होता है।

(ii) विवाह के समय स्त्री व पुरूष की आयु कानूनी तौर पर क्रमशः 18 वर्ष व 21 वर्ष होनी चाहिए।

(iii) लोगों को समझाकर और प्रोत्साहन देकर छोटा परिवार रखने के लिए प्रेरित किया जाता है।

पाठांत प्रश्न

1. आयु और लिंग के आधार पर भारत की जनसंख्या की संरचना की विवेचना कीजिए।
2. भारत में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर के कारण उत्पन्न हुई समस्याओं का वर्णन कीजिए।
3. भारत में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर के कारण उत्पन्न हुई समस्याओं के समाधान के उपाए बताइए।
4. भारत में वर्ष 1921 से होने वाले जनसंख्या परिवर्तन की प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए।
5. "ऊंची जन्म दर जनसंख्या की ऊंची वृद्धि दर का मूल कारण है।" क्या आप इससे सहमत हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कारण बताइए।
6. भारत में साक्षरता दर कितनी है? निरक्षरों की कुल संख्या में क्या परिवर्तन हुए हैं?
7. निर्भरता अनुपात से आप क्या समझते हैं?
8. भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि दर को रोकने की आवश्यकता के कारण बताइए।

उत्तर

पाठगत प्रश्न 32.1

1. (i) गलत (ii) गलत (iii) सही

2. (i) 84.63, (ii) 32.5, 11.4 (iii) 2.11 (iv) 10 (v) 2001

पाठगत प्रश्न 32.2

1. (i) 929, (ii) पुरूषों, स्त्रियों (iii) ऊंचा (iv) 75 (v) बढ़ता (vi) बढ़ी (vii) 7 (viii) कम (ix) अधिक

2. (i) गलत (ii) गलत (iii) सही (iv) सही (v) सही (vi) गलत (vii) सही।

पाठगत प्रश्न 32.3

(i) गलत (ii) सही (iii) सही (iv) गलत

पाठगत प्रश्न 32.4

(i) गलत (ii) सही (iii) सही

पाठांत प्रश्न

1. पढ़िए अनुभाग 32.4 (i) और (ii)
2. पढ़िए अनुभाग 32.5
3. पढ़िए अनुभाग 32.6
4. पढ़िए अनुभाग 32.3
5. पढ़िए अनुभाग 32.3
6. पढ़िए अनुभाग 32.4 (v)
7. पढ़िए अनुभाग 32.4 (ii)
8. पढ़िए अनुभाग 32.5